ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 289-294
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

कौशाम्बी जनपद में पर्यटन विकास की समस्याएँ

डॉ0 अरूण कुमार दीक्षित

प्रवक्ता, भूगोल विभाग जनता इण्टर कालेज, जेवर, गौतमबुद्ध नगर (उ0प्र0) भारत

Received-21.06.2022, Revised-25.06.2022, Accepted-29.06.2022 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः – ***कौशाम्बी जनपद का प्राचीन काल से ही एक सांस्कृतिक महत्त्व रहा है। बौद्ध धर्म का उद्भव व प्रतिष्ठा की दृष्टि से कौशाम्बी का विशेष महत्त्व है। गौतम बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व में कपिलवस्तु में हुआ था। 29 वर्ष की अवस्था में उन्होंने ईश्वरीय प्रेरणा से राजसी सुख–सुविधा त्यागकर भारत के अनेक स्थानों पर भ्रमण किया। अन्ततः 41 वर्ष की अवस्था में उन्हें बोधगया में ज्ञान प्राप्त हुआ तथा प्रथम उपदेश सारनाथ (काशी) में पंच शिष्यों को दिया। वहाँ से वे कौशाम्बी गये और वहाँ उन्होंने वर्तमान कोसम ग्राम में बौद्ध केन्द्र की स्थापना की। इस प्रकार बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार की दृष्टि से कौशाम्बी का विशेष महत्त्व है।***

कुंजीभूत शब्द– सांस्कृतिक महत्त्व, प्रतिष्ठा, ईश्वरीय प्रेरणा, राजसी सुख–सुविधा, भ्रमण, ज्ञान, प्रथम उपदेश, आकृष्ट।

इस जनपद का सृजन 4 अप्रैल 1997 को इलाहाबाद (प्रयागराज) जनपद के पश्चिमी भाग में किया गया। प्रयागराज का पर्यटन की दृष्टि से विश्वस्तरीय महत्त्व है। चूँकि प्रयागराज में प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु माघ मेले में आते हैं। इस दृष्टि से कौशाम्बी के पर्यटन स्थलों का आकर्शण बढ़ाकर तथा पर्यटन सम्बन्धी सुविधाएँ विकसित कर प्रयागराज आने वाले पर्यटकों को कौशाम्बी दर्शन हेतु आकृष्ट किया जा सकता है। यह एक बड़ी उपलब्धि होगी, क्योंकि कौशाम्बी जनपद का क्षेत्रीय विस्तार कम होने के बावजूद यह महाजनपद काल से ही सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही समृद्ध रहा है। यहाँ हिन्दू, जैन, बौद्ध, मुस्लिम मतावलम्बियों हेतु महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थल विद्यमान है, जिसका विकासकर भारत के पर्यटक मानचित्र पर उनको उभाड़ा जा सकता है। इससे राज्य सरकार को अर्थ की प्राप्ति के साथ ही स्थानीय लोगों को विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त होगा।

पर्यटक देवतुल्य है। वह हमारे ऊपर आश्रित नहीं है बल्कि हम उसके ऊपर आश्रित है। पर्यटक हमारे अनुसार यात्रा का निश्चय व योजना नहीं बनाते हैं वे स्वतंत्र है। हमारा कार्य है कि हम विभिन्न पर्यटक केन्द्रों के महत्त्व व वहाँ उपलब्ध सुविधाओं की सारी जानकारी उन्हें प्रदान करें जिससे उनमें ऐसे स्थलों को देखने की लालसा जागृत हो। पं0 जवाहरलाल नेहरू ने कहा है कि पर्यटक परस्पर सूझबूझ, व्यापक दृष्टिकोण तथा मित्र भावना (Fellow Feeling) को जागृत करता है। यह सब आज के समय की आवश्यकता है। विश्वस्तर पर पर्यटकों की संख्या प्रतिवर्ष 6 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। इस प्रकार पर्यटन देश के सामाजिक–सांस्कृतिक पक्ष के साथ आर्थिक पक्ष से भी जुड़ा है। वर्तमान में पर्यटन को Smokeless Industry की मान्यता प्राप्त है जिसमें बिना किसी कारखानें व उत्पादन के विदेशीमुद्रा प्राप्त होती है एवं प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार प्राप्त होता है।

भारत में प्राचीन काल से ही पर्यटन का महत्त्व रहा है। पुरातत्त्वीय प्रमाणों से यह बात पुष्ट होती है कि ईसा के 3000 से 1500 वर्ष पूर्व हड़प्पा के लोग सुमेर व फारस की खाड़ी स्थित नगरों से व्यापार करने के लिए नियमित यात्राएँ करते थे। उस समय आवागमन नदियों के द्वारा होता था। मेसोपोटामिया में हड़प्पा की मुद्राओं का मिलना इस बात संकेत है कि भारत व ईराक की बीच उसी समय से व्यापारिक सम्बन्ध विद्यमान थे। भारत की उष्ण एव उपोष्ण कटिबन्धीय स्थिति, अनेक प्रकार के उच्चावचीय स्वरूप, प्राकृतिक दृष्य, लम्बी समुद्रतट रेखा पर्यटन विकास हेतु पूर्णतः अनुकूल है। यहाँ प्राचीनकाल से ही ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक पर्यटक स्थलों की अधिकता रही है जो यहाँ के पर्यटन विकास के मुख्य आधार हैं।

पर्यटन स्थल का आकर्षण पर्यटन विकास हेतु आधारभूत तत्व है। दूसरे लोगों द्वारा पर्यटक स्थलों की चर्चा, तत्सम्बन्धी साहित्य एवं वर्तमान में इन्टरनेट सुविधाओं के विकास से विभिन्न क्षेत्रों की विस्तृत जानकारी प्राप्त होना पर्यटन को बढ़ावा देता है। परिवहन एवं आवासीय सुविधा का विकास पर्यटन विकास के दो प्रमुख स्तम्भ हैं। पर्यटन स्थल कितना ही आकर्षक व महत्त्वपूर्ण क्यों न हो, यदि वहाँ के लिए परिवहन व आवासीय सुविधा का विकास नहीं हुआ है तो पर्यटन हेतु लोग उत्साहित नहीं होंगे जिससे पर्यटन का विकास अपेक्षित रूप में नहीं किया जा सकेगा। परिवहन की सुविधा पर्यटन स्थल एवं पर्यटक के स्थाई आवास के मध्य सम्पर्क का कार्य करती है। इसके विकास के बिना पर्यटक उद्योग की कल्पना करना उसी तरह कठिन है जिस तरह मानव जीवन रक्त संचालन के बिना असम्भव है। आवासीय सुविधा पर्यटक विकास हेतु द्वितीय आधार स्तम्भ है। यदि दर्शनीय स्थल पर आवासीय सुविधा का विकास नहीं है तो पर्यटक वहाँ जाकर उसी दिन लौट आयेगा, जिससे वहाँ विभिन्न प्रकार की सेवाओं के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। आवासीय सुविधा के साथ भोजनालय, होटल, रेस्तरॉ

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

एवं विपणन की सुविधाओं का विकास होता है जो किसी स्थल को बड़े पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित होने में सहयोग करते है।

पर्यटन व्यक्ति में सामूहिकता की भावना के विकास से सम्बन्धित है। प्रकृति ने विश्व के प्रत्येक स्थल को कुछ विशिष्ट रूप से सृजित किया है इस प्रकार प्रत्येक स्थान समेकित विशेषताओं की दृष्टि से एक दूसरे से भिन्न है। यहाँ तक कि मानव समुदाय के लिए अति उपयोगी खनिज व ऊर्जा संसाधनों के वितरण में पर्याप्त असमानता दृश्टिकोण होती है। कोई भी देश व प्रदेश ऐसा नहीं है, जहाँ पर उसके उपयोग के सभी संसाधन आवश्यकतानुसार उपलब्ध हों। इसलिए उसे दूसरे क्षेत्रों पर आश्रित होना पड़ता है। इससे स्पश्ट होता है कि प्रकृति का उद्देश्य मानव समाज में परस्पर निर्भरता एवं सामूहिकता की भावना का सृजन है और पर्यटन भी उसी भावना का प्रतीक है। पर्यटन से हम दूसरे समाज के लोगों के सम्पर्क में आते हैं एवं उनकी अच्छाइयों व जीवन ढंग से परिचित होते हैं, जिससे हमें एक नयी ऊर्जा व प्ररेणा प्राप्त होती है। इसके साथ ही विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक दृष्यों के अवलोकन से मनोरंजन के साथ मानसिक संतुष्टि भी मिलती है।

इस प्रकार पर्यटन का उद्देश्य व्यापक एवं मानव समाज हेतु बहुत ही उपयोगी है। जिससे मनुष्य के ज्ञान के विकास के साथ उसकी शारीरिक व मानसिक क्षमता का भी विकास होता है। इसके साथ ही लोगों की धारणीयता (Acceptibility) में वृद्धि होती है। संचार क्रांति के द्वारा वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व एक ग्लोबीय विलेज के रूप में स्थापित है तथा तीव्र पर्यटन के विकास से इस उद्योग को ग्लोबीय स्तर पर बढ़ावा मिला है, जिससे दूसरे समाज के लोगों को जानने, परखने एवं उससे सम्बन्ध स्थापित करने में काफी सुविधा हुई है।

World Tourism Organization (WTO) भारत जैसे विकासशील देशों में पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु प्रतिबद्ध है। उसके अनुसार The promotion and development of Tourism with a view to contributing economic development, international understanding peace, prosperity and universal respect for all without distinction or race, sex, language or religion, the organization shall take all appropriate action to attain this objective. In persuing this aim, the organization shall pay particular attention to the interest of the developing countries in the field of tourism.

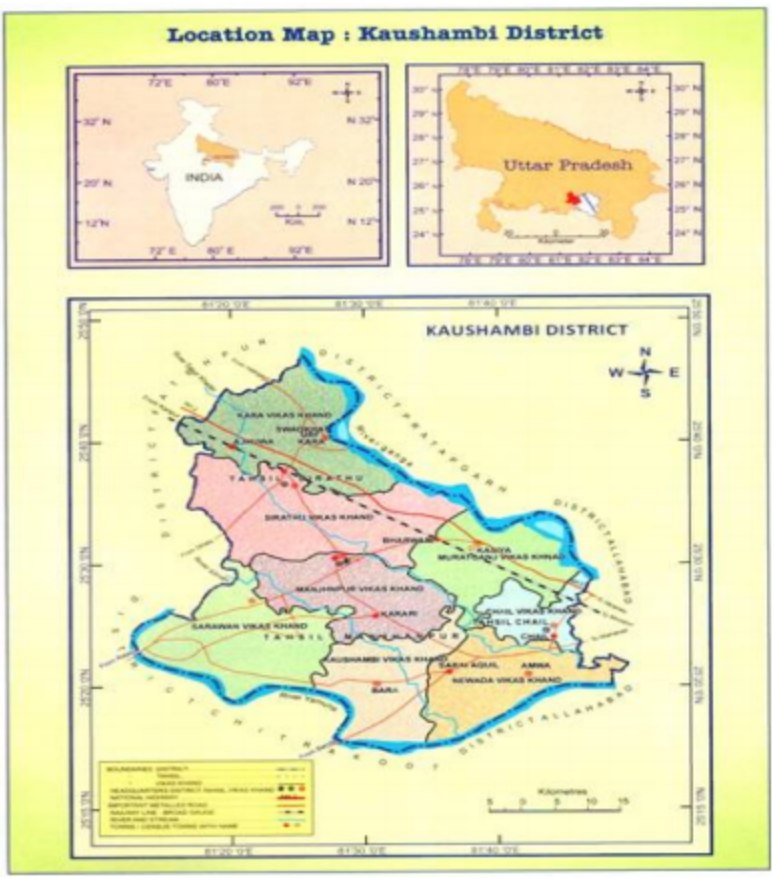

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

प्रमुख पर्यटन स्थल –

1. कड़ा – यह स्थल जनपद के उत्तरी भाग में स्थित है। यह कड़ा विकासखण्ड के अन्तर्गत आता है। यहाँ शीतला माता का पवित्र धाम एवं सूफीसंत कड़कशाह की दरगाह स्थित है। यह धाम सती देवी के हाथ (कर) गिरने से कड़ा नाम से जाना जाता है। यह भारत के 51 शक्तिपीठों में महत्त्वपूर्ण है। यहाँ कालेश्वर महादेव का प्राचीन मन्दिर भी है। इस मन्दिर परिसर में नागा संतों की समाधियाँ भी है। इसके अतिरिक्त यह सन्त मलूकदास की साधनास्थली एवं कर्मस्थली रही है। उनके द्वारा रचित ग्रंथ की पांडुलिपियाँ आज भी यहाँ सुरक्षित है। इस प्रकार यह स्थल हिन्दू एवं मुस्लिम अनुयायियों के श्रद्धा का केन्द्र है।

2. जैन तीर्थ कौशाम्बी – यह स्थल प्रयागराज से दक्षिण–पश्चिम दिशा में लगभग 60 किमी0 दूरी पर कोसम ग्राम में विद्यमान है। यह नगरी प्राचीन काल में बहुत ही समुन्नत एवं वैभवसम्पन्न थी। अब इस स्थान पर कोसम, गढ़वा, कोसम इनाम, कोसम खिराज, पाली, अम्बा कुआ आदि छोटे–छोटे ग्राम विद्यमान हैं। षोडश महाजनपदों में वत्स का नाम सर्वविदित है। कौशाम्बी इस जनपद की राजधानी थी। इस नगर को 6वें तीर्थंकर भगवान पद्मप्रभु की जन्मस्थली माना जाता है। यहाँ 23वें तीर्थकर भगवान पारसनाथ का आगमन भी हुआ था। इसलिए यह जैन धर्मावलम्बियों हेतु प्रमुख तीर्थ माना जाता है। पुरातात्त्विक खुदाई से यहाँ प्राचीन मन्दिर की दीवालें तथा एक विषाल पाषाण स्तम्भ मिला है, जिसे सम्राट अशोक द्वारा स्थापित माना जाता है।

3. घोसिताराम विहार – यह कौशाम्बी जनपद की महान धरोहर है। यह भगवान गौतम बुद्ध एवं उनके प्रिय शिष्य आनन्द की कर्मस्थली रहा है। इसे आनन्द ने भगवान बुद्ध के परिनिर्वाण हेतु उपयुक्त स्थान माना था। यह विहार कोसम नामक ग्राम में स्थित है जो कौशाम्बी विकासखण्ड के अन्तर्गत आता है। यहाँ के भग्नावशेष आज भी अपनी कोख में एक अशोक स्तम्भ के साथ अपनी ऐतिहासिक गरिमा को संचित किया है। यहाँ भगवान बुद्ध एवं आनन्द अपने प्रिय आवास (आराम) पर विश्राम करते थे। बौद्ध संघ में विभेद इसी घोसिताराम विहार में हुआ था।

कौशाम्बी का उत्खनन

4. पभोसा – यह प्रभासगिरि तीर्थ क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। यह स्थल कौशाम्बी से पश्चिम दिशा में लगभग 10 किमी0 की दूरी पर यमुना नदी के उत्तरी तट पर स्थित है। यहीं मनोहर उद्यान में भगवान पद्मप्रभु को कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ था। यहाँ पद्मप्रभु की प्रतिमा के साथ नेमिनाथ की प्रतिमा विद्यमान है। जनश्रुतियों के अनुसार इस पहाड़ी पर प्रत्येक रात्रि केशर की वर्षा होती है। चैत्रशुक्ल पूर्णिमा को यहाँ दिव्य उत्सव मनाया जाता है तथा मकरसंक्रांति के दिन भी मेला लगता है। यह मान्यता है कि भगवान श्रीकृष्ण का स्वधामगमन इसी प्रभासक्षेत्र में हुआ था। पभोसा, कौशाम्बी जनपद का एक प्रमुख दर्शनीय स्थल है। यह विन्ध्य श्रेणी के क्रम में आता है, जिसकी ऊँचाई लगभग 280 मीटर है। इस पर्वत का उत्तरी शिखर 6वें तीर्थंकर भगवान पद्मप्रभु के स्मृति चिन्हों से पूर्णतया ओत–प्रोत है। इसलिए जैन, बौद्ध एवं हिन्दू धर्म की दृष्टि से इसका विशेष महत्त्व है। यहाँ पर्यटन विकास की पर्याप्त सम्भावनाएँ हैं। प्रभासगिरि की पहाड़ियाँ अपनी प्राकृतिक रमणीयता एवं विशिष्ठ भौगोलिक स्थिति के कारण इस क्षेत्र को गौरव प्रदान करती है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

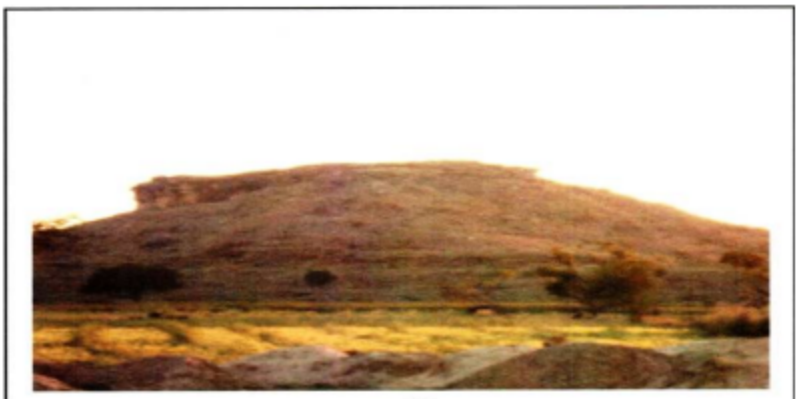

प्रभासगिरि

प्रभाश गिरि स्थित जैन मन्दिर

जैन तीर्थंकर प्रभास गिरि मंदिर में स्थित

5. चरवा – त्रेता युग में भगवान श्रीराम ने सीता तथा भाई लक्ष्मण के साथ वन गमन के समय चरवा आये थे। यहाँ रामजूठातालाब के तटपर स्थित बट वृक्ष के नीचे भगवान ने विश्राम किया था। इसलिए हिन्दू धर्म अनुयायियों के लिए एक तीर्थस्थल के रूप में विद्यमान है। चरवा ग्राम श्रृंगवेरपुर स्थित गंगा जी के दक्षिणी तट से लगभग 15 किमी0 की दूरी पर स्थित है। चरवा से प्रयागराज स्थित भरद्वाज आश्रम लगभग 30 किमी0 की दूरी पर है। वटवृक्ष के नीचे बने श्रीराम के चरणचिन्ह के पास एक कुटी, दो शिवालय व विशाल रामलीला मंच विद्यमान है, जहाँ प्रत्येक विजयादशमी को मेला लगता है।

बाल्मीकि रामायण (2/56/24–25) के अनुसार – न्यग्रोध समुपागम्य वैदेही चाभ्यवन्दत। नमस्तेस्तु महावृक्षा

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

पारयेन्मे पतिव्रतम्।।

अर्थात् वट वृक्ष के समीप पहुँचकर श्री सीता जी के मस्तक झुकाया और कहा – हे महावृक्ष आपको प्रणाम है। आप ऐसी कृपा करें जिससे मेरे पति अपने वनविषयक व्रत को पूर्ण करे। ऐसा कहकर मनस्विनी श्री सीता जी ने हाथ जोड़े हुए उसकी परिक्रमा की।

6. अलवारा झील – यह जनपद का मुख्य प्राकृतिक स्थल एवं पर्यटकों के आकर्शण का केन्द्र है। यह सरसंवा विकासखण्ड में पश्चिम शरीरा–बैरागीपुर सड़क मार्ग पर स्थित है। बैरमपुर गांव से 2 किमी0 पश्चिम में भगत का पुरवा नामक गांव है जहाँ से यह प्रारम्भ होकर गौर, टिकरा, उमरांव शाहपुर, भगत का पुरवा आदि गांवों के मध्यवर्ती क्षेत्र में वृत्ताकार रूप में फैली है। स्थानीय लोग इसे अलवारा ताल या दशरथ ताल के नाम से जानते है। यह झील 50 वर्ग किमी0 क्षेत्र पर फैली है, जिसमें वर्षभर जल विद्यमान रहता है। शीतकाल में रंग–विरंगे साइबेरियाई पक्षी इस झील की शोभा बढ़ाते हैं। इसका सुन्दरीकरण कर पर्यटकों को आकृष्ट किया जा सकता है।

पर्यटनस्थलों की अवस्थिति

क्र.सं.	नाम	विकासखण्ड	दूरी (प्रयागराज) से
1	कड़ा	कड़ा	70 किमी0
2	जैनतीर्थ कौशाम्बी	कौशाम्बी	60 किमी0
3	घोसिताराम विहार	कौशाम्बी	60 किमी0
4	प्रभासगिरि	कौशाम्बी	61 किमी0
5	चरवा	मूरतगंज	20 किमी0
6	अलवारा झील	सरसंवा	65 किमी0

स्रोत : लेखक द्वारा संगृहीत।

समस्याएँ –

1. परिवहन एवं सम्पर्क मार्ग – कौशाम्बी जनपद पर्यटन की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण होने के बावजूद यहाँ सड़कों एवं सम्पर्क मार्गों का विकास अपेक्षाकृत कम हुआ है। पर्यटन के यथोचित विकास के लिए आवश्यक है कि निकटवर्ती जनपदों फतेहपुर एवं प्रयागराज से यह अच्छे सड़क मार्गों से सम्बद्ध हो। कौशाम्बी जनपद में केवल एक ही राष्ट्रीय राजमार्ग है जो वाराणसी से फतेहपुर को जोड़ता है एवं जनपद के पूर्वोत्तर भाग में स्थित है। इसी के समानान्तर उत्तर मध्य रेलवे की की कानपुर–मुगलसराय लाइन भी है। जनपद में राजमार्गों की बहुत ही कमी है। कड़ा एवं चरवा पर्यटन केन्द्र राष्ट्रीय राजमार्ग से निकट हैं, लेकिन इन केन्द्रों को जोड़ने वाले सम्पर्क मार्ग अच्छी स्थिति में नहीं है। जनपद के मध्यवर्ती एवं दक्षिण पश्चिम भाग में सड़कों की कमी है। कोसम इनाम व कोसम खिराज स्थान जो जनपद के सर्वप्रमुख पर्यटन केन्द्रों से सम्बद्ध हैं, उन्हें अन्य पर्यटक स्थलों से जोड़ा जाना चाहिये। ये स्थल आज भी जिला मुख्यालय मंझनपुर से सड़क मार्ग द्वारा सीधे सम्बद्ध नहीं है। भरवारी से करारी टाउन होते हुए कोसम इनाम तक सीधी सड़क होनी चाहिए। इसी प्रकार सरसवां विकासखण्ड स्थित अलवारा झील को भी सीधे कोसम इनाम टाउन से जोड़ा जाना चाहिए। कोसम इनाम व कोसम खिराज कौशाम्बी विकासखण्ड में स्थित है। यहाँ पर जैन तीर्थ, बौद्ध विहार एवं प्रभाषगिरि जैसे महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल स्थित हैं। इसलिए जनपद के प्रमुख स्थलों से इन्हें सड़क मार्ग द्वारा सीधे संयुक्त किया जाना आवश्यक है।

2. होटल व रेस्टोरेंट – कौशाम्बी जनपद में होटल व रेस्टोरेंट की बहुत ही कमी है। जनपद मुख्यालय में भी गिने चुने होटल हैं जो यहाँ की आवश्यकता की दृष्टि से अपर्याप्त हैं। इस दृष्टि से जनपद मुख्यालय मंझनपुर में टूरिस्ट बंगलों, सर्किट हाउस व होटल की स्थापना की जानी चाहिये। यह नगर जनपद के मध्य में होने के कारण अन्य सभी पर्यटन स्थलों को संयुक्त करने हेतु केन्द्र स्थल के रूप में कार्य कर सकता है। इसके अतिरिक्त कोसम इनाम में होटलों व रेस्टोरेंट की

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

स्थापना की जानी चाहिए, जिसमें पर्यटक यहाँ रात्रि विश्राम कर सकें। अभी तक पर्यटक प्रयागराज में सीधे इस स्थल पर आते हैं और सायंकाल पुनः प्रयागराज लौट जाते हैं। होटल व मोटेल की स्थापना होने ने यहाँ स्थित पर्यटन केन्द्रों का और अधिक विकास होगा और परोक्ष रूप से रोजगार में वृद्धि होगी।

3. जलापूर्ति एवं विद्युत व्यवस्था – इन जनपद के अन्तर्गत स्थित पर्यटन केन्द्रों में समुचित जलापूर्ति एवं विद्युत व्यवस्था का अभाव है। इस दृष्टि से कोसम इनाम व कोसम खिराज टाउन विशेष महत्त्वपूर्ण हैं, जिनमें कौशाम्बी जनपद का स्वर्णिम अतीत छिपा हुआ है। सुचारू विद्युत व्यवस्था से यहाँ की प्राचीन इमारतों की सुरक्षा तो होगी ही, यहाँ पर्यटक रात्रि विश्राम भी करेंगे। इसके साथ ही इन स्थलों पर स्वच्छ पेय जल की उपलब्धता भी आवष्यक है। इससे पर्यटकों को विशेष सुविधा होगी।

4. पार्क व लैण्डस्केपिंग – जनपद में स्थित पर्यटन केन्द्रों में पार्कों का बहुत ही अभाव है। पार्कों की स्थापना से पर्यटन स्थलों की दर्शनीयता व भव्यता में वृद्धि होगी। इस दृष्टि से सभी पर्यटन स्थलों यथा देवी स्थल – कड़ा, चरवा, अलवारा झील, कवि मंझन के गृहनगर मंझनपुर में पार्कों की स्थापना की जानी चाहिए। प्रभासगिरि में लैण्ड स्केपिंग के द्वारा उसकी सुन्दरता में वृद्धि की जा सकती है जिससे अधिक पर्यटक उसे देखने के लिए उत्साहित होंगे क्योंकि कौषाम्बी का प्राचीन वैभव इसी स्थल पर छिपा है, उसे और अधिक तरासने की आवश्यकता है।

5. पर्यटक सूचना केन्द्र – कौशाम्बी जनपद में पर्यटक सूचना केन्द्रों का भी अभाव है। आज भी प्रयागराज स्थित पर्यटक सूचना केन्द्रों से यहाँ के स्थलों की जानकारी प्राप्त होती है। यहाँ स्वतंत्र रूप में पर्यटक सूचनाकेन्द्रों की स्थापना की जानी चाहिए। इसके लिए जिला मुख्यालय मंझनपुर एवं कोसम इनाम स्थित पर्यटक केन्द्र पर सूचना केन्द्रों की स्थापना आवश्यक है। इस दृष्टि से जनपद स्थित पर्यटन केन्द्रों की परस्पर सम्बद्धता अति आवश्यक है। सूचना के अभाव में पर्यटक अन्य स्थलों पर नहीं जा पाते है, जिससे जनपद में पर्यटन विकास प्रभावित होता है।

6. संग्रहालयों की स्थापना – जनपद के प्रमुख पर्यटन केन्द्रों पर संग्रहालयों की स्थापना की जानी चाहिए। कोसम इनाम में एक संग्रहालय की आवश्यकता है जहाँ जैन व बौद्ध काल की अनेक महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ रखी जा सकती है। संग्रहालयों के अभाव में पुरातात्त्विक महत्त्व की वस्तुओं की सुरक्षा नहीं की जा सकती। इस दृष्टि से जिला मुख्यालय मंझनपुर एवं जैन व बौद्ध तीर्थ कोसम इनाम व कोसम खिराज में इस प्रकार के संग्रहालयों की स्थापना की जानी चाहिये।

7. हेरिटेज जोन एवं सुरक्षा – पर्यटन स्थलों के विकास हेतु हेरिटेज जोन की स्थापना की जानी चाहिए। इससे पर्यटकों की संरक्षा एवं सुरक्षा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त प्रत्येक पर्यटन केन्द्र पर पुलिस चौकी की स्थापना की जानी चाहिए। पर्यटन स्थलों पर असामाजिक तत्त्वों का जमावड़ा व अनैतिक गतिविधियों को रोकने हेतु यहाँ पर्याप्त सुरक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए। कौशाम्बी, वत्स गणराज्य की राजधानी होने के कारण हेरिटेज की दृष्टि से बहुत ही सम्पन्न है। महाजनपद काल एवं महाभारत काल के अनेक स्थल यहाँ आज भी विद्यमान हैं जिनकी संरक्षा हेतु हेरिटेज जोन की स्थापना आवश्यक व उपादेय है। उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कौषाम्बी का अतीत बहुत ही स्वर्णिम रहा है और इसका भविष्य भी अनेक दृष्टियों से उज्ज्वल व अपार सम्भावनाओं से परिपूर्ण है। महातेजस्वी राजा कुषाम्ब ने कौशाम्बी पुरी की स्थापना की थी, जिसे वर्तमान में कोसम के नाम से अभिहित किया जाता है। यहाँ के पर्यटन स्थल भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इसका समुचित विकास कर भारत के पर्यटक मानचित्र पर इसे प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में उभाड़ा जा सकता है और देश विदेश के लोगों को यहाँ भ्रमण हेतु आकृष्ट किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बंसल, सुरेश चन्द्र (2017) : पर्यटन भूगोल एवं यात्रा प्रबन्धन, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।
2. दीक्षित, अरूण कुमार (2018), कौशाम्बी जनपद में ग्रामीण विकास नियोजन, प्रत्यूष पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
3. Gosh, N.N. (1936), The Early History of Kaushambi, Allahabad.
4. पाण्डेय, एस0के0 (2011), कौशाम्बी का स्वर्णिम इतिहास एवं वर्तमान, मीरा पब्लिकेशन्स, प्रयागराज।
5. शर्मा, एस0के0 व सिंह, आर0पी0 (2007), पर्यटन भूगोल, नेहा पब्लिकेशन्स, बरेली।
6. Tyagi, Nutan (1991), Hill Resorts of U.P. Himalaya : A Geographical Study, Indus Publishing Com pany, New Delhi.
7. वाल्मीकीय रामायण – गीताप्रेस, गोरखपुर, उ0प्र0 273005.

*****